बी.एच.आई.सी.-112 : भारत का इतिहास-VII (*c.* 1605-1750)

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः बी.एच.आई.सी. -112
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.आई.सी -112 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-2027
अधिकतम अंकः 100

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित है। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) मराठा शक्ति के उदय की आलोचनात्मक जाँच कीजिए। 20

2) मुगलों के अधीन अंतर्देशीय व्यापार की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) अकबर के शासनकाल के विशेष संदर्भ में मुगल–राजपूत संबंधों की जाँच कीजिए। 10

4) सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के दौरान वैष्णव भक्ति के विकास पर चर्चा कीजिए। 10

5) जहाँगीर के समय की वास्तुशिल्प परियोजनाओं पर एक नोट लिखिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) मुगल दरबार में महिलाएं 6

7) वस्त्र और पोशाक (सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के दौरान) 6

8) जागीरदारी संकट 6

9) पहाड़ी चित्र–पंजाब की पहाड़ियाँ 6

10) फ़ारसी और क्षेत्रीय स्रोत 6

1) मराठा शक्ति के उदय की आलोचनात्मक जाँच कीजिए। 20

उत्तर

मराठा शक्ति का उदय सत्रहवीं शताब्दी के भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण राजनीतिक प्रक्रिया थी। इसे केवल शिवाजी की असाधारण वीरता अथवा मुगलों के विरुद्ध संघर्ष का परिणाम मानना पर्याप्त नहीं है। दक्कन की भौगोलिक परिस्थितियों, स्थानीय सामाजिक समूहों, राजस्व-व्यवस्था, सैनिक संगठन और बीजापुर तथा अहमदनगर जैसे राज्यों की राजनीति ने मिलकर मराठा राज्य-निर्माण के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं। शिवाजी ने इन अवसरों को संगठित राजनीतिक शक्ति में बदला, जबकि उनके उत्तराधिकारियों और पेशवाओं ने इस आधार को आगे बढ़ाया।

दक्कन की राजनीतिक पृष्ठभूमि

सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में दक्कन के अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा राज्य मुगलों के दबाव तथा पारस्परिक संघर्षों का सामना कर रहे थे। अहमदनगर की सत्ता कमजोर होने से अनेक मराठा सरदारों को विभिन्न दरबारों में सैन्य और प्रशासनिक अवसर मिले। शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले ने अहमदनगर और बीजापुर की सेवा की थी। इस अनुभव से परिवार को भूमि-अधिकार, किलों और स्थानीय समर्थकों का महत्त्व समझ में आया। पुणे, मावल तथा पश्चिमी घाट के क्षेत्रों में देशमुख, पाटिल, कृषक और सैनिक समुदाय स्थानीय राजनीति में सक्रिय थे। फलतः शिवाजी को कोई शून्य से खड़ा किया गया जनसमूह नहीं, बल्कि पहले से उपस्थित शक्ति-संसाधन मिले।

भूगोल और सामाजिक आधार

सह्याद्रि पर्वत, दुर्गम घाटियाँ, संकरे दर्रे और समुद्रतटीय कोंकण, विशाल मैदानी सेनाओं के लिए चुनौती थे। स्थानीय भूगोल से परिचित मावले सैनिक तेजी से स्थान बदल सकते थे। शिवाजी ने तोरणा, राजगढ़, प्रतापगढ़ और रायगढ़ जैसे दुर्गों का उपयोग सैनिक सुरक्षा तथा राजनीतिक नियंत्रण के लिए किया। दुर्ग केवल शरणस्थल नहीं थे; उनसे मार्गों, अनाज, कोष और आसपास के गाँवों पर निगरानी रखी जाती थी। परंतु मराठा शक्ति को केवल किसी एक जाति या धार्मिक